गुरु कृपा हि केवलं
मंत्र
चौंतीसा
संग्रह कर्ता:
राजर्षि अशोकानंद समयाचारी,
नर्मदा तट
समयोचित
यह समय और इसी समय
समाचार, मीडिया और मनोरंजन
पहल और प्रस्तुति

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं
शंकररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः
सर्वत्र वन्द्यते॥

भावार्थ:- ज्ञानमय, नित्य, शंकर रूपी गुरु की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके आश्रित होने से ही टेढ़ा चन्द्रमा भी सर्वत्र वन्दित होता है॥

मंत्र चौंतीसा

लेखक

राजर्षि अशोकानंद समयाचारी,

अमरकंटक, मध्य प्रदेश

संपादक

अबीर मजूमदार,

कोलकाता, बंगाल

समयोचित, यह समय और इसी समय

समर्पण

मेरी अपनी

हम अपने आप को भाग्यशाली समझते हैं। कि इस दिव्य भारत भूमि पर हमारा जन्म हुआ। हमारे ऋषि मनीषियों और ईष्ट कृपा प्राप्त साधकों नें आंतरिक व बाह्य दोनों पक्षों को गहराई से समझकर उनके कल्याण मात्र के लिने नाना प्रकार की दिव्य क्रियाओं, मंत्रों, यंत्रों व तांत्रिक पद्धतियों का सृजन किया। जिसका प्रयोग कर जीव मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

एक मनुष्य के रूप में मिले शरीर की सबसे बड़ी सार्थकता यही है कि हम आत्म कल्याण के साथ ही साथ अन्य मनुष्यों और जीवों के कल्याण का प्रयास कर सकते हैं।

हमनें अपने साधना पथ की दीर्घ यात्रा में जो कुछ भी प्राप्त किया।अनुभव,अध्ययन और अग्रज जनों के कृपा प्रसाद स्वरूप । उसका एक अंश लोक कल्याण की भावना के साथ यहां प्रस्तुत है। अधिकांश प्रयोग विशुद्ध मांत्रिक पद्धतियों के हैं,और इनकी साधना का एक व्यवस्थित क्रम होता है। अतः प्रयोगकर्ता जन भली प्रकार से उसके मर्म,स्वयं के लिए उपयोगिता,आवरण पूजन की पद्धति को गुरु या विद्वान साधक से समझकर प्रयोग में लें ।स्वयं का चिकित्सक बनना हानिप्रद हो सकता है। कूप , बावड़ी आदि का निर्माण इसलिए किया जाता है कि प्यासे व्यक्ति उस जल स्रोत से अपनी तृप्ति कर सकें ।

यदि कोई अल्पबुद्धि मनुष्य मानव उस कूप या बावड़ी में आत्मघात कर लें तो कूप या बावड़ी के निर्माण कराने वाले का क्या दोष। हां एक महत्वपूर्ण तथ्य यह कि साधना में सिद्धि लाभ होना गुरु,ईष्ट के प्रति श्रद्धा समर्पण,सतता और धैर्य पर निर्भर करता है।इनके अभाव में सिद्धि लाभ की अपेक्षा करना फूटे घड़े में पानी भरने जैसा है । साधकों और जिज्ञासु जनों का सदैव स्वागत है।

साधु के घर में दरवाजा नहीं होता

नर्मदा तट -अमरकंटक,

मध्यप्रदेश,

इ-मेल : sbb.rewa@gmail.com

संपादकीय

प्रस्तुत पुस्तक अमरकंटक स्थित, संत-योगी सतगुरुदेव राजर्षि अशोकानंद समयाचारी, जिन्हे हम भक्ति पूर्वक अशोकानंद महाराज कहकर सम्बोधित करते है, उनके द्वारा उनके शब्दों में अवतरित स्वरुप है। प्रस्तुत पुस्तक में कुछ उत्कृष्ट मंत्रों, क्रियाओं और उपायों के बारे में बहुत सारी जानकारी है जो पारिवारिक शत्रुता, कलह, दुःख और पीड़ा से छुटकारा पाने के लिए प्रभावी हैं। "मंत्र चौंतीसा" का अर्थ है 34, इसमें 34 अलग अलग विधि और मंत्र प्रयोग हैं।

अशोकानंद जी महाराज से मेरा परिचय मेरे ही एक भाई रमन के द्वारा हुई थी। मुझे अभी तक महाराज के दर्शन का सौभाग्य नहीं मिला है, लेकिन उनसे बातचीत काफी समय से चल रही है। मैं इस संपादकीय कालम में उनके बारे में वह सारी जानकारी प्रस्तुत कर रहा हूं जो मुझे बिभिन्न माध्यम से प्राप्त हुई है ।

अशोकानंद जी महाराज का जन्म 1978 में छत्रगढ़, जिला-रीवा, मध्यप्रदेश, को मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश से लगे जागीरदार परिवार में हुआ। क्षत्रिय वंश के होते हुए भी उनके पूर्वज और पिता तंत्र साधना में रुचि रखते थे। उनमे भी यही कारण से समय के साथ साथ धीरे धीरे रुचि जागृत होने लगे। 14 साल की उम्र से ही उन्होंने साधना शुरू कर दी थी। परिवार का सबसे बड़ा बेटा होने के नाते, उन्होंने अपनी पढ़ाई और साधना साथ-साथ जारी रखी। स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी करने के बाद वह परिवार की जिम्मेदारी उठाने और खुद को आर्थिक रूप से सामर्थ बनाने में सक्षम रहे। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने एक अंतरराष्ट्रीय संस्था में काम करना शुरू कर दिया था। लेकिन केवल चौबीस साल की उम्र में ही इसी क्रम और कुछ उत्तम साधनाओं की तलाश उन्हें उनके गुरुदेव भगवान "स्वामी शिवदत्त गोविंदानंद समयाचारी" के पास तक ले गयी । बस और क्या, जीव को शिव की प्राप्ति हुई और तब से यात्रा सतत् चल रही है। वर्ष 2010 में उन्होंने साधना को अपने जीवन में प्राथमिकता दी और खुद को पूरी तरह से माँ नर्मदा के तट में साधना भजन के लिए समर्पित कर दिया। साधना की इस अवधि के दौरान, साधना के उद्देश्य से कनखल-उत्तराखण्ड, राजरप्पा-झारखण्ड, प्रयाग-उत्तर प्रदेश, विंध्याचल-उत्तरप्रदेश, सोनकुंड छत्तीसगढ़, अष्टभुजा -मध्यप्रदेश, चोटिला-गुजरात जैसे स्थानों का भी यात्रा उन्होंने किया है।

चरण वंदना के साथ, हम उनके लंबे स्वस्थ जीवन और साधना जारी रखने की कामना करते हैं, और हम उनकी साधना की उपलब्धि को जानने के आग्रह रखते है, जो हमारे जीवन को समृद्ध बनाएगी।

अबीर मजूमदार

संपादक, समयोचित,
कोलकाता, बंगाल,

मेरे गुरुदेव

मेरी जन्मभूमि के समीप ही एक पौराणिक सुरम्य सरिता के तट पर एक भजनानंदी महात्मा निवास करते हैं ।

अपने शैक्षणिक कार्यों की व्यस्तता के बीच समय निकाल कर मैं उनके आश्रम पर श्रीरामचरितमानस का पाठ करने नित्य ही जाया करता था।

धीरे-धीरे हम दोनों में काफी घनिष्ठता हो गयी ,एक दिन एक चर्चा के बीच प्रसंगवश मैंने महराज जी से प्रश्न किया "कौन होंगे मेरे गुरुदेव"

महराज जी ने कहा *जब कोई मिले और सीधे गले पर वार कर दे तो समझ लेना मंजिल मिल गयी।

कालांतर में एक अन्य परिचित महात्मा के निर्देश पर मैं महराज जी के दर्शन हेतु श्रीअयोध्या धाम पहुंचा, चलते समय महराज जी ने अपने गले की माला उतार कर मेरे गले में डाल दी , तत्क्षण मुझे महात्मा जी की कही बात का स्मरण हो आया।

तब से आज तक स्नेह और कृपा की धारा अविरल प्रवाह मान है।

महराज जी के निर्देश में मैंने स्वयं के और अन्य लोगों के लिए भी अनुष्ठान किये-कराये ।

महराज जी के साथ मैंने कई -कई यात्राएं की और भगवती नर्मदा की लंबी पदयात्रा भी।

पुस्तक में बहुत से चमत्कारिक अनुभव के प्रसंग डाले जा सकते थे।

पर महराज की लौकिक अलौकिक दिव्यानुभूतियों के आनंद लेनें के पक्षधर हैं।उनके शब्दों में -:

"यह प्रचार की विषयवस्तु नहीं है,जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ,जीवन में प्रतिक्षण चमत्कार ही तो घटित हो रहा है"

स्वानुभव की एक बात और कहना चाहूंगा

ये सब प्रसंग पुस्तकें,पढ़ने सुनने में जितने सहज प्रतीत होते हैं वास्तव में मार्ग उतना ही श्रमसाध्य है।

*साहिब का घर दूर है जैसे पेड़ खजूर.... ।"

सुजीतानंद समयाचारी

संस्थापक, बीबीआरपी पब्लिक स्कूल करमदार

नगर पंचायत, हर्रैया

जिला-बस्ती (उत्तर प्रदेश),

पिन - 272155,

इ-मेल : bbrpkaramdar2018@gmail.com

संपर्क : 9984626793

विषय-सूची

साधना पृष्ठ

गुरु की महिमा सकल संसार में सभी धर्म-संप्रदायों में एक मत से सर्वोपरि मानी गयी है, फिर तो भगवान दत्तात्रेय त्रिदेव(ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के एकीकृत अवतार व आदिगुरु हैं, समर्पण पूर्वक की गयी उनकी आराधना प्रतिकूल से प्रतिकूल परिस्थितियों में दैहिक, दैविक,भौतिक तीनों तापों का शमन कर साधक के जीवन में नयी आशा का संचार करती है ।

मंत्र

1) हरि ओम् तत्सत् जय गुरुदत्त ।

2) ओम् द्रां ह्रीं क्रों

3)ओम् द्रां ह्रीं क्रों दत्तात्रेयाय विद्महे योगीश्वराय धीमहि । तन्नो दत्तः प्रचोदयात्

विधि:-

भगवान दत्तात्रेय का चित्र रख कर श्वेत वस्त्र धारण कर ,श्वेत आसन पर बैठ कर,श्वेत पुष्प,श्वेत चंदन,धूप, दीप,श्वेत नैवेद्य द्वारा भगवान दत्तात्रेय का पूजन कर यथा शक्ति नियमित रुप से जप करें,

लाभ:-

इस मंत्र के नियमित/सतत् जप से ग्रहों की अनुकूलता प्राप्त होती है, जपकर्ता /साधक को अन्य साधनाओं में सफलता प्राप्त होती है ||

भाग्योदय कारक गणपति मंत्र

यह विशिष्ट गणपति बीज मंत्र भाग्योदय हेतु बहुत ही प्रभावी है,इसकी साधना करने से कार्य सुगमता से होते है, सर्व बाधाओ का शमन होता है,परिस्थितियां साधक के अनुकूल होने लगती हैं ।

ध्यान:-

"गजाननं भूतगणादि सेवितं,कपित्थ जम्बूफलसार भक्षितम् ॥
उमासुतं शोक विनाशकारणं,नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम् ॥"

जप मंत्र:-"ओम् गं नमः

वस्त्र - पीत (पीला)

आसन -पीत(पीला)

माला - हरिद्रा(हल्दी)

गौमुखी - पीत(पीला)

भोग - पके केले का

चंदन - पीत(पीला)

पुष्प - पीत(पीला)

विधि:-

भगवान गणपति का पंचोपचार पूजन कर हल्दी की माला से 51 माला 15 दिनों तक करें, उसके बाद 1 या 3 माला के क्रम से नित्य प्रति जपते रहें,

विशेष :-

यह जप एक आसन पर किया जाता है,यानी जप प्रारंभ करने से लेकर 51 माला पूर्ण करने के क्रम में आसन नही छोडना है ।

त्रिविध सिद्धि प्रद शाबर शिव-मंत्र

यह भगवान शिव का प्रभावी शाबर मंत्र अत्यंत तीव्र प्रभाव युक्त है,समर्पण पूर्वक साधना किये जाने पर साधक के त्रितापों का हरण कर ,त्रिविध विधि सिद्धि प्रदान करता है ।

मंत्रः-

“ ओम् ह्रीं श्रीं ठं ठं ठं नमों भगवते
मम् सर्व कार्याणि साधय-साधय माम् रक्ष रक्ष
शीघ्रं माम् धनिनं कुरु-कुरु हुं फट्
श्रियं देहि प्रज्ञां देहि ममापत्ति निवारय निवारय स्वाहा”

विधिः-

किसी स्थापित या पार्थिव शिवलिंग पर उक्त मंत्र का 7 बार जप कर प्रत्येक आवृत्ति पर एक बिल्वपत्र चढावें,अर्थात एक बार मंत्र पढे व एक त्रिदल युक्त बिल्वपत्र शिवलिंग पर चढावें ऐसा 7 बार करें, उसके बाद शिवलिंग के समीप या शिवालय के किसी भी स्थान पर बैठ कर या अपने पूजा घर में बैठ कर रूद्राक्ष की माला से एक माला (108 बार) नित्य जप करते रहें, ऐसा नित्य प्रति करते रहने पर यथेष्ट धन प्राप्ति, कार्य सिद्धि, और विपत्ति नाश होता है ll

भाग्यवृद्धि कारक व लक्ष्मीवर्धक पद्मावती मंत्र

यह पद्मावती मंत्र नियम उपादानों के बंधन से परे,
जप प्रधान मंत्र है,केवल नियमित जप की प्रधानता है,और प्रतिदिन जप
करने से शीघ्र मंत्र के चमत्कारी प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगते हैं ।

मंत्रः-

"ओम् नमो भगवती पद्म-पद्मावती ओम् ह्रीं श्रीं ओम् पूर्वाय दक्षिणाय
पश्चिमाय उत्तराय आणपूरय सर्वजन वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा"

विधिः-

प्रातःकाल उठकर किसी से बात चीत किये बिना ही,दायें हाथ में पीले सरसों के कुछ दाने लेकर उक्त मंत्र का 108 बार जप कर सरसों के दाने चारों दिशाओं में घड़ी की दिशा के क्रम में(clockwise) कमरे में बिखेर दें ।

विशेषः-

इसका प्रयोग रात्रि जिस बिस्तर पर शयन किया गया था,सुबह उसी पर बैठे बैठे करना है,इस मंत्र में शुद्धता-अशुद्धता का दोष नही देखा जाता,नित्य जप की प्रधानता रहती है।

मंत्र का जप शुक्लपक्ष के प्रथम शुक्रवार से प्रारंभ करना चाहिये।

———————— ✕ ————————

विविध लाभ प्रद सिद्ध गणपति मंत्र

यह प्रात: जप किये जाने वाला जप प्रधान सिद्ध गणेश मंत्र साधक को बहुआयामी लाभ देने में सक्षम है,नियमित रूप से जपे जाने पर कार्य सिद्धि, बाधानाश,सम्मोहक प्रभाव का सृजन कर साधक को चतुर्दिक लाभ प्रदान कराता है ।

मंत्र:-

"ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं श्रुं वर गणपति वरदे विश्वं मम वश्यं आनय आनय स्वाहा"

विधि:-

रात्रि काल में जिस बिस्तर पर शयन किया गया था उसी पर सुबह जागते ही इस मंत्र का 108 बार जप कर चारों दिशाओं में घडी की दिशा में (clockwise)फूंक मार दें, कुछ ही समय में स्वयं परिस्थितियों में परिवर्तन देखेंगे ।

विशेष:-

इस मंत्र का प्रारंभ शुक्लपक्ष के प्रथम बुधवार या चतुर्थी तिथि से करना उत्तम होता है ।

सम्मोहन प्रभाव वर्धक मुख प्रक्षालन प्रयोग

यह सरल सा लगने वाला प्रयोग नियमित रुप से किये जाने पर साधक के व्यक्तित्व में सम्मोहक प्रभाव का सृजन करता हैं ।

मंत्र:-

ओम् वश्यमुखि राजमुखि स्वाहा

विधि:-

प्रातः उठते ही किसी तांबे/कांसे के पात्र में जल लेकर उक्त मंत्र से 21बार शक्तिकृत करें (एक बार मंत्र पढें व पात्र के पानी पर फूंक दें,ऐसा 21 बार करें) फिर उस जल से मुंह धो लें, ऐसा नियमित रुप से करने पर शीघ्र ही परिवर्तन द्दष्य होता है ।

विशेष:-

किसी विशेष मुहूर्त में उक्त मंत्र की 21 माला फेर लेने से मंत्र की शक्ति में विशेष वृद्धि होती हैं ।

शयन रक्षक शाबर मंत्र प्रयोग

कई बार यह देखने में आता है,बहुत से लोग शांति पूर्वक शयन नही कर पाते हैं,नींद लगते ही उन्हे नाना प्रकार के स्वप्न दिखने लगते हैं,स्थान परिवर्तन के कारण बेचैनी घबराहट, अनिद्रा,स्थान या किसी अशरीरी बाधा के कारण चैन से सो नही पाते,ऐसी परिस्थितियों में यह मंत्र पर्याप्त लाभ प्रद रहता है ।

मंत्रः-

"ओम् गुरू जी
अमर पिछौडा ओढ के
सुख मंडल में सोय
उत्तर करियो सिरहाना
पश्चिम करियो पीठ
देख कबीरा सुन भाई साधो
जम की लगे न डींठ "

विधिः-
रात्रि शयन करने के समय शयन शैय्या पर बैठकर उक्त मंत्र का 7 बार जप कर तीन बार ताली बजादेना चाहिये।

विशेषः-
शाबर विद्या का यह स्वयं सिद्ध शाबर मंत्र सीधे प्रयोग किये जाने पर भी पूर्ण प्रभाव दिखाता है।

मार्गदर्शन मंत्र प्रयोग

कई बार व्यक्ति जीवन पथ पर बडी अनिश्चितता की स्थिति में होता है,वो निर्णय नही कर पाता किस पथ पर चले,क्या करे असमंजस में रहता है,ऐसी परिस्थितियों में इस मंत्र की आराधना करने पर कुछ ही समय में साधक को करणीय कर्म का बोध होने लगता है ।

मंत्र:-

गुरु गंगा तीर्थानि सहस्त्राणि ब्रह्माणि कोटि तीर्थानि मेव च ब्रह्मसुता कर्म स्पष्टताय नमः

विधि:-

इस मंत्र हेतु आसन:पीला, वस्त्र:पीला, माला:हल्दी या रुद्राक्ष, चंदन:पीला, पुष्प:पीला, धूप,दीप, नैवेद्य:पीले रंग का प्रयोग करें उत्तम होगा, प्रातःकाल स्नान कर पीत वस्त्र धारण कर उक्त मंत्र की एक माला नित्यप्रति जपते रहने पर शीघ्र ही अनुकूल पडनेवाले कर्म का बोध होने लगता है ।

विशेष:-

यह मंत्र विशिष्ट फल प्रद मंत्र है, संसारी व अध्यात्मार्गी साधक के लिये समान रूप से मार्गदर्शन करता है,साधक को यह अनुकूल पडने वाले मंत्र,देवता,करणीय कर्म का बोध कराता है ।

मनोकामना सिद्ध कर प्रयोग

आज के सामाजिक परिवेश में व्यक्ति नाना प्रकार की कामनाओं से ग्रस्त रहता है, यह कामना पूरक मंत्र साधना किये जाने पर व्यक्ति की सद्कामनों की पूर्ति हेतु अनुकूल वातावरण तैयार कर व प्रतिकूल बाधाओं को समाप्त कर उनकी सिद्धि कराता है ।

मंत्रः-

"ओम् हर त्रिपुर हर भवानी बाला राजा प्रजा मोहिनी सर्व शत्रु विध्वंसिनी मम चिन्तितं फलं देहि-देहि भुवनेश्वरी स्वाहा"

विधिः-

अभीष्ट कार्य की मन में कल्पना करते हुये,इस मंत्र का नित्य तीन माला के क्रम से रुद्राक्ष की माला पर जप करते रहने पर सद् मनोरथों की सिद्धि होती है।

×

मनोनिग्रह,ब्रह्मचर्य वर्धक मंत्र प्रयोग

स्वभाविक रूप से यह मानव तन षड्-विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और ईर्ष्या)से युक्त है, किसी व्यक्ति में किसी न किसी प्रकार के विकार की प्रधानता रहती ही है , यहाँ विशेष रूप से कामेच्छाओं के नियंत्रण हेतु सरल मंत्र दिया जा रहा है, यह स्वयं सिद्ध मंत्र मात्र अल्पमात्रा मे जपे जाने पर ही पूर्ण प्रभाव प्रगट करता है ।

मंत्रः-

“सनत्कुमार देवर्षि शुक भीष्म प्वलंगमः
पंचैतान् संस्मरेन्नित्यं कामस्तस्य न बाधते”

विधिः-

प्रातःकाल उठते ही और रात्रि सोने के पहले 21-21 बार नित्यप्रति उक्त मंत्र का जप करते रहने पर ही साधक के मनोनिग्रह और इंद्रियों पर नियंत्रण होता है ।

स्त्री सौभाग्य वर्धक मंत्र प्रयोग

यह विशिष्ट स्त्री सौभाग्य वर्धक मंत्र जीवन में सुख,शांति,समृद्धि की कामना रखनेवाली महिलाओं के लिये अत्यंत लाभदायक है, जीवन में सौख्य (सुख) की कामना करनेवाली स्त्रियों को नित्य जपना चाहिए।

मंत्र:-

"उमा,ऊषा च वैदेही,रमा,गंगेति पंचकम् ।
प्रभाते संस्मरेन्नित्यं सौभाग्यं वर्धते सदा ॥"

विधि:-

नित्य प्रातः सायं 21-21 बार इस मंत्र का जप करते रहने पर स्त्रियों को चतुर्दिक लाभ वा सौख्य की प्राप्ति होती है।

———————— × ————————

आहार पचाने का मंत्र प्रयोग

आजकल हमारी जीवन शैली ऐसी हो गयी है,जिसके फल स्वरूप उदर (पेट)संबंधित रोग बडी समान्य सी बात हो गयी है,ऐसे रोगी जन इस मंत्र के प्रयोग से बहुत लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

मंत्र:-

"अगस्त्यं,कुम्भकर्णं च,शनिं च,वडवानलम्।
आहारं परिपाकार्थं स्मरेद् भीमं च पंचमम् ॥"

विधि:-

भोजन करने के बाद हाथ-मुंह धोने के बाद वज्रासन पर (जो लोग न बैठ सकें वो सुखपूर्वक किसी भी आसन पर बैठकर या खडे रहकर,उपरोक्त मंत्र 7 बार पढते हुये पेट पर 7 बार ही हाथ फेरें । इससे आहार पाचन होगा और उदर रोगों से मुक्ति होगी॥

आयुवर्धक मंत्र प्रयोग

संसार में कई व्यक्ति ऐसे होते हैं,जिनकी पत्रिका मे़ क्षीण आयु का योग होता है,कोई न कोई आधि-व्याधि या दुर्घनाएं उनके पीछे लगी ही रहती हैं,ऐसे व्यक्ति इस मंत्र का प्रयोग कर इन सब दुर्घटनाओं से मुक्ति पाकर स्वस्थ्य व दीर्घायु जीवन प्राप्त कर सकते हैं।

मंत्र:-

"अश्वत्थामा,बलिर्व्यासो,हनुममांश्च,विभीषणः,कृप: परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविन: ॥ सप्तैतान् संस्म्रेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जित: ॥ "

अर्थात अश्वत्थामा, बलि, वेदव्यास, विभीषण, हनुमान, कृपाचार्य, परशुराम, तथा मार्कण्डेय मुनि को जो प्राणी प्रात:काल मे स्मरण करता है वह शतायु होता है

विधि:-

नित्यप्रति प्रातःकाल उठते ही अपनी दोनों हथेलियों का दर्शन करते हुये,उक्त मंत्र का 9/11बार जप करें व हथेलियों को आपस में रगड कर चेहरे व सिर पर फेरें, ऐसा नित्य करते रहने से आयुक्षीणता के दुर्योग समाप्त होते हैं,व व्यक्ति दीर्घायु होता है।

अनिद्रा रोग मुक्ति हेतु तंत्र प्रयोग

यह रोग भी आज कल की आधुनिक जीवन शैली का ही परिणाम है, हमारी दिनचर्या ,खानपान, सोने-जागने सभी का समय अव्यवस्थित हो गया है,आधुनिक उपकरण (gadgets) के प्रयोगों का भी इन रोगों के विकास में बडा हाथ है,आज व्यक्ति नींद लेने के लिये तरह-तरह के नशे और दवाओं का प्रयोग कर रहा है,और उनके दुष्प्रभाव के कारण अन्य घातक रोगों का शिकार होता जा रहा है, ऐसे लोग इस मंत्र और औषधि का संयुक्त प्रयोग कर पूर्ण लाभ ले सकते हैं ॥

मंत्रः-

"ओम् कुंभकर्णाय नमः"

औषधिः-

आंवला चूर्ण 100 ग्राम,धनिया चूर्ण 100 ग्राम, देशी मिश्री चूर्ण 100 ग्राम

तीनों को अच्छे से मिला कर एक डिब्बे में भर कर रख लें,

विधिः-

रात्रि सोने के पहले ,औषधि के डिब्बे को अपने सामने रख लें, और रख लें और रुद्राक्ष की माला से दिये गये मंत्र का एक माला जप करे, जप करने के उपरांत डिब्बे की औषधि में फूंक मार दें, और उस में से 10-15 ग्राम(एक बडे चम्मच) औषधि का सेवन करें, चिंता मुक्त गहरी निद्रा का लाभ होगा,और शरीर के लिये हानिकारक दवाओं से भी मुक्ति होगी ॥

स्वप्न विद्या प्रयोग-1

(स्वप्न में अपने प्रश्नों के उत्तर पाने का क्षेत्रपाल मंत्र)

यह चमत्कार तंत्र के विलक्षण प्रयोगों में एक है,
व्यक्ति के मन में नाना प्रकार की जिज्ञासा होती है,यह मंत्र जिन भी
व्यक्तियों को अनुकूल पडता है,उनकी अनेकोनेक समस्याओं का
समाधान स्वप्न के माध्यम से करता रहता है।

मंत्रः-

"ओम् क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षैत्रपालाय नमः"

विधिः-

रात्रि भोजन के बाद दरी/कम्बल भूमि (फर्श) पर बिछाकर उसी पर बैठ कर उक्त मंत्र का तीन माला रुद्राक्ष की माला से जप करें और जप की समाप्ति पर क्षैत्रपाल देवता से निवेदन कर जिस प्रश्न का उत्तर चाहिए उसे मन में तीन ही बार कहें, तदोपरांत रुद्राक्ष की माला को तकिये के नीचे रख कर जप किये गये आसन पर ही शयन करें,ऐसा तीन करें प्रश्न का उत्तर स्वप्न में प्राप्त होगा॥

स्वप्न विद्या प्रयोग-2

(स्वप्न में आवाज आने का अर्हं मंत्र)

यह जैन तंत्र परंपरा का सिद्ध मंत्र है, स्वप्न में समस्या समाधान, मार्गदर्शन हेतु उत्तम है, प्रयोग किये जाने पर मंत्र अनुकूल रहे तो स्वप्न में या अर्धनिद्रा की अवस्था में कोई आवाज देकर समस्या का समाधान/ मार्गदर्शन करता है।

मंत्र:-

" ओम् ह्रीं अर्हं क्ष्वीं स्वाहा "

विधि:-

रात्रि में सोने के पहले मस्तक पर श्वेत चंदन का तिलक लगा कर मंत्र का एक माला जप कर सो जायें तो स्वप्न/अर्धनिद्रा की अवस्था में प्रश्न का उत्तर प्राप्त होता है॥

विशेष:-

मंत्र साधक को भूमि पर कम्बल/दरी बिछाकर शयन करने के नियम का पालन करना चाहिए॥

स्वप्न विद्या प्रयोग-3

(स्वप्न वाराही विद्या मंत्र)

स्वप्न में उत्तर प्राप्ति का यह मंत्र भी विशिष्ट शक्ति-प्रभाव युक्त है, इस मंत्र की प्राप्ति हमें वाराणसी (उत्तर प्रदेश) निवासी स्नेही मित्र और सुयोग्य साधक जो की पेशे से शासकीय शिक्षक हैं के संग्रह से प्राप्त हुई है।

मंत्र:-

"ओम् नमों वाराही अघोरे स्वप्नं दर्शय-दर्शय ठः ठः ठः स्वाहा"

विधि:-

रात्रि भोजन कर शुद्ध वस्त्र धारण कर जब सोने जायें तो बिस्तर पर बैठकर प्रश्न के उत्तर की प्राप्ति का निवेदन कर मंत्र का मात्र 100 बार जप कर सो जायें,किसी भी प्रकार के विशिष्ट विधान की आवश्यकता नही है, इस मंत्र के अनुष्ठान में एक विशेषता यह है की अधिकाधिक साधकों को इससे उत्तर की प्राप्ति हो जाती है, किसी को एक दिन किसी को चार तो किसी को आठवें या दसवें दिन उत्तर मिल जाता है,
विशेष:- इस मंत्र को 11 दिन करने का विधान है, अत: उत्तर कभी भी मिल जाये पर 11 दिन के नियम का पालन अवश्य करना चाहिये ॥

अध्ययन में रुचि पैदा करने का मंत्र प्रयोग

प्रायः देखने में है आता है कि व्यक्ति की अध्ययन में रुचि समाप्त हो जाती है, विशेष रूप से यह समस्या विद्यार्थी वर्ग में अधिकांश देखने को मिलती है,माता-पिता पालक जन इसे लेकर काफी परेशान हो जाते हैं,ऐसी परिस्थितियों में निम्न मंत्र का प्रयोग कर पर्याप्त लाभ लिया जा सकता है ॥

मंत्रः-

" ओम् ऐं बाण्यै स्वाहा "

विधिः-

किसी भी रविवार को एक तांबे/कांसे/चांदी की कटोरी में जल लेकर 21बार उक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर समस्याग्रस्त बच्चे को पिला दें, ऐसा तीन रविवारों तक करें , वांछित परिणाम प्राप्त होंगे ॥

कन्याओं को उत्तम वर प्राप्ति हेतु मंत्र प्रयोग

युवतियां जो जीवन में सुयोग्य वर प्राप्ति की कामना रखती हैं उनके लिये यह मंत्र सर्वथा अनुकूल प्रभाव देने वाला है ॥

मंत्र:-

"ह्रीं कुमाराय नमः"

विधि:-

कुमार कार्तिकेय के चित्र या मूर्ति को सामने रख कर भाव पूर्वक पंचोपचार(चंदन/पुष्प/धूप/दीप/नैवेद्य) से पूजन करें तदोपरांत 11 माला नित्य के क्रम से नित्य जप करते रहने पर 3 माह में ही सुयोग्य वर की प्राप्ति होती है॥

युवकों के विवाह हेतु विश्वासु मंत्र प्रयोग

जिन युवकों के विवाह में बाधा/विलंब हो रहा हो उन्हे इस मंत्र का प्रयोग अवश्य करना चाहिए इसके प्रभाव स्वरूप मनोनुकूल घराने की सुलक्षणा युवती से उनका विवाह हो जाता है ॥

मंत्र:-

" जलांजलि मंत्र:- ओम् श्री विश्वासु गंधर्व राजाय इदम् जलांजलिं समर्पयामि नमः"

जप मंत्र:-

" ओम् विश्वासु गंधर्वः कन्या माम् अधिपतिः सुरूपां सालंकारों देहि मे नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा"

विधि:-

नित्य स्नान से पवित्र हो कर जलांजलि मंत्र से सात अंजलि मंत्र दें । उसके बाद पूजा स्थल पर लाल वस्त्र धारण कर, लाल आसन पर बैठ कर,लाल चंदन की माला से उक्त मंत्र का एक माला जप तीन माह तक करें ॥

✕

संतान प्राप्ति का मंत्र प्रयोग

कई बार व्यक्ति के जीवन में कुछ बाधाओं या दुर्योगों के कारण संतान का लाभ प्राप्त नही कर पाता,ऐसी स्थिति में इस मंत्र का प्रयोग करने पर भगवान आशुतोष की कृपा प्राप्ति होती है । और उनकी कृपा से असंभव भी सहज संभव हो जाता हो ॥

मंत्र:-

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं आं शं शंकराय मम सकल जन्मांतरार्जित पूर्व पापम् विध्वंसय-विध्वंसय श्रीमते आयुःप्रदाय, धनदाय, पुत्रदारादि सर्वविधि सौख्यं देहि-देहि मध्ये माम् अखण्डितं कुरु कुरु सर्वान् कामान् पूरय पूरय शं आं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ"

विधि:-

शुक्लपक्ष के प्रथम सोमवार से भगवान को जल चढाकर प्रारंभ करें, रुद्राक्ष की माला प्रयोग करें, 51000 की संख्या में जप कर दशांश हवन करें,, उसके बाद यथा शक्ति नित्य जप करते रहने पर कामना सिद्ध होती है ॥

भाग्योदय कारक मंत्रात्मक टोटका

इस मंत्रात्मक टोटके का प्रयोग स्वयं मैंने कई बार करवाया है
अधिकांशतः परिणाम बडे सुखद रहे ,ऐसे व्यक्ति जिनके कार्यों में बहुत
अड़चने आतीं थी,भाग्य साथ नही देता था
उन्हे इस उपाय के करने से पर्याप्त लाभ मिलता है ॥

मंत्र:-
" ओम् मम् कार्य सिद्ध करोति स्वाहा "

विधि:-
किसी भी शुक्रवार की शाम उक्त मंत्र का जप करते करते किसी दुकान पर जायें और वहां से एक नया ताला खरीद कर लायें (विशेष ध्यान यह रखना है कि कई बार दुकानदार ताला देते समय उसे खोल और बंद कर के चेक करते हैं ऐसा उन्हे न करनें दें) और उसे अपने शयन कक्ष में रख दें,अगले दिन यानी शनिवार को सूर्यास्त के बाद ताला लेकर उक्त मंत्र जपते जपते किसी मंदिर में जायें और उस ताले को वहीं अर्पण कर आयें, जब भी उस ताले को वहाँ के पुजारी खोलेंगे उसके साथ ही भाग्य के बंधन खुल जायेंगें ॥

×

धन/समृद्धि कारक पद्मावती मंत्र प्रयोग

भगवती पद्मावती की महिमा जगतविदित है,
विशेष रूप से जैन तंत्र संप्रदाय में तो ये प्रमुखता से पूज्य हैं, समर्पण पूर्वक
की गई इनकी साधना निःसंदेह फलप्रद होती है ॥

मंत्रः-

"ह्रीं पद्मावत्यै नमः"

विधिः-

किसी भी शुभ योग में भगवती पद्मावती के चित्र की स्थापना पीत वस्त्र पर करें, और उनका पंचोपचार पूजन करें. पुष्प पीला और नैवेद्य में बेसन के लडडू प्रयोग करें, इस प्रकार पूजन कर कमलगट्टे की माला से 9 माला उक्त मंत्र का जप करें ॥

विशेषः-

दिन या रात्रि के द्वितिया प्रहर में इनकी उपासना उत्तम फल प्रद होती है ॥

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु घण्टाकर्ण मंत्र प्रयोग

यह घण्टाकर्ण लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र बहुत सशक्त मंत्र है, साधना करने पर प्रारब्धवश समय तो लग सकता है, पर निराशा नही, धैर्यपूर्वक करते रहने पर लाभ अवश्य होता है ,इसमें संशय नही ॥

मंत्रः-

" ओम् ह्रीं श्रीं घण्टाकर्णो नमोस्तुते ठःठःठःस्वाहा "

विधिः-

लाल कमल के आसन पर विराजमान लक्ष्मी जी के फोटो का पंचोपचार पूजन लाल पुष्प,लड्डू,पानी वाले नारियल से करें ॥ स्वयं हेतु लाल आसन,लाल वस्त्र, का प्रयोग करें व लाल चंदन की ही माला से उक्त मंत्र का 7/9/11 माला नित्य जप करें ॥

धैर्यपूर्वक तीन माह ऐसा करते रहने पर सकारात्मक परिणाम दृष्टिगोचर होने लगते हैं ॥

दुःस्वप्न नाशक मंत्र प्रयोग

प्रायः देखने में आता है की बहुत से लोग दुःस्वप्न से परेशान रहते हैं ऐसे लोग निम्न मंत्र के जाप से लाभ ले सकते हैं यह मंत्र दुःस्वप्नों का नाश कर शुभ फलों की वृद्धि करता है।

मंत्रः-

"ओम् वाराणस्यां दक्षिणे कोणे,
कुक्कुटो नाम ब्राह्मणः ।
तस्य स्मरण मात्रेण ,
दुःस्वप्नोऽपि शुभं भवेत ॥ "

विधिः-

प्रातः काल उक्त मंत्र का यथा शक्ति जप कर अपनी दायीं हथेली के ऊपर फूंक मारें और हथेली को मुंह पर फेर लें , इससे दुःस्वप्नों का नाश होगा और शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

———— ✕ ————

आत्म रक्षा हेतु चक्रेश्वरी देवी मंत्र

किसी भी प्रकार की विघ्न बाधा से मुक्ति हेतु और आत्म रक्षा हेतु यह मंत्र विलक्षण प्रभाव युक्त है॥

मंत्र:-

“ ओम ह्रीं श्रीं ह्रीं चक्रेश्वरी देवी मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा ”

विधि:-

किसी भी शुभ मुहूर्त में या शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार को भगवती दुर्गा के ही विग्रह में चक्रेश्वरी देवी का पंचोपचार पूजन कर रात्रि के दूसरे प्रहर में उक्त मंत्र का 1100 बार जप करें यदि संभव हो तो 108 बर सामान्य हवन सामग्री से हवन भी करें । ऐसा करने पर यह मंत्र चैतन्य हो जाता है। प्रयोग विधि: नित्य 21 बार जप करें ।
किसी आकस्मिक संकट के उत्पन्न होने पर संकट मुक्ति तक एक माला (108 बार) नित्य जपते रहें।
ऐसा करने से शीघ्र ही संकट निवृत्ति होती है॥

मानसिक शक्ति वर्धक मंत्र

मानसिक श्रम करने वाले व्यक्तियों, विद्यार्थियों व और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए यह उत्तम प्रकृति का मंत्र है।

मंत्रः-

"ओम् ओम् ओम् हः हः ऐं नमः"

विधिः-

किसी भी सिद्ध पर्व काल या नवरात्रि में इस मंत्र की 21 मालाएं (2100 बार) जपे जाने पर यह मंत्र चैतन्य हो जाता है। यदि जपोपरांत घृत और गूगल मिलाकर 251 आहुतियां दें दी जायें तो मंत्र के उत्तम परिणाम प्राप्त होने लगते हैं।

प्रयोग विधिः-

प्रातः,सायं काल में एवं अध्ययन पर बैठने के पहले मात्र 21 बार इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

रोजी-रोजगार प्राप्ति का अनुभूत मंत्र प्रयोग

सहज प्रतीत होने वाला यह मंत्र वस्तुत: स्वयं में चमत्कारिक प्रभाव से युक्त है, आवश्यकता है तो केवल विश्वास पूर्वक करने की ॥

मंत्रः-

" काली कंकाली महाकाली
मुख सुंदर जीव्हे व्याली
चार वीर भैरूं चौरासी
बता तो पूजूं पान मिठाई
अब बोलो काली की दुहाई"

विधिः-

प्रतिदिन स्नानोपरांत गीले वस्त्र ही इस मंत्र का 7 बार जाप करें तदोपरांत वस्त्रादि पहन कर पूर्वाभिमुख होकर बैठ जावें और उक्त मंत्र का मात्र 50 बार जाप करें।

ऐसा कुछ समय नियमित तौर पर जाप करते रहने पर कुछ ही काल में आजीविका के यथोचित साधन की प्राप्ति होती है।

बहुकार्य साधक सिद्ध प्रकृति का मंत्र

यदि कोई साधक बहुमंत्रों की सिद्धि के फेर में न पड़ कर एक मात्र इस मंत्र की सिद्धि कर ले तो भी उसके अनेक कार्य सहजता पूर्वक सिद्ध होते रहते हैं।

मंत्र:-

"ओम् ह्रीं श्रीं सप्रेश्वरी बहुकार्य फट् स्वाहा"

विधि:-

किसी भी शुभ मुहूर्त में जप प्रारंभ कर नित्य जप करते हुये 51000 मंत्रों का जप पूर्ण करें व सामान्य हवन सामग्री से दशांश हवन , तर्पण,मार्जन कर लें। इतना करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग विधि:-

सिद्धि उपरांत नित्य एक माला जप करें, किसी विशेष कार्य की सिद्धि हेतु जाना हो तो मन ही मन जाप करते हुये कार्य के लिए जावें कार्य सिद्धि होगी।

लक्ष्मी कृपा पाने का जैन मंत्र

यह मंत्र नित्य प्रति नियम पूर्वक जपे जाने पर धनागमन के विविध स्रोत खोलता है और धन की स्थिरता प्रदान करता है॥

मंत्रः-

" ओम् ह्रीं हूं णमों अरिहंताणं हूं नमः"

विधिः-

शुक्ल पक्ष के किसी भी शुक्रवार से जब साधक का चंद्रमा अनुकूल हो तब प्रारंभ करें एक, तीन या पांच माला नित्य के क्रम से जाप करें। स्फटिक की माला पर जप करना उत्तम रहेगा।ऐसा कुछ काल तक करते रहने से धन -संपदा प्राप्त होती है आय में वृद्धि होती है।

राज्याधिकारी वशीकरण का अनुभूत मंत्र

यह लघु मंत्र शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है,और ऐसे लोग जिनका काम शासकीय या निजी क्षेत्र के अधिकारी या उच्च पदाधिकारियों राजनीतिक पदाधिकारीगण से पड़ता रहता है उनके लिए अत्यंत लाभप्रद है।

मंत्रः-

"ओम् हुम फट्"

विधिः-

शुक्ल पक्ष के किसी भी सर्वार्थ सिद्धि योग,अमृत सिद्धि योग या अन्य सिद्ध पर्व से प्रारंभ कर एक लाख जप करने पर यह मंत्र साधक के लिए चैतन्य हो जाता है।

प्रयोग विधिः-

नित्य प्रति एक माला का जप करते रहने पर मंत्र प्राणवान बना रहता है, जब भी किन्हीं व्यक्ति विशेष से मिलना है उनके नाम या स्वरूप का ध्यान कर पांच माला जप करें और मन ही मन जप करते हुए वांछित व्यक्ति से मिलें आपके व्यक्तित्व का सम्मोहन उन पर अवश्य पड़ेगा।

×

कन्या के ससुराल में सुखी रहने का तांत्रिक

आजकल के समय में यह बड़ा आम सा हो गया है, कहीं बहू के पैर नहीं टिकते वो ससुराल में रहना ही नहीं चाहती,तो दूसरी स्थिति में कहीं ससुराली जन ऐसे मिल जाते हैं कि बहू/बेटी को चैन से रहने नहीं देते। ऐसी किसी भी स्थिति में यह प्रयोग अपना अमोघ प्रभाव दिखाता है।

मंत्र:-

"ओम् नमों भोगराज भयंकर पीर भूप सुतई-धरई जो-जो दीखे मारकरन्ता सो-सो दीखे पाब परन्ता ओम् नमों ठ: ठ: स्वाहा"

विधि:-

यद्यपि यह मंत्र स्वयं सिद्ध प्रकृति का है फिर भी उत्तम होगा प्रयोग कर्ता किसी शुभ मुहूर्त से प्रारंभ कर उपरोक्त मंत्र का 1100 या 11000 जप कर लें ।ऐसा करने पर मंत्र साधक के लिए परम प्रभावी हो जाता है।

प्रयोग विधि:-

सांभर नमक की 108 डलियां श्वेत वस्त्र पर अपने सामने रखें और मंत्र का 108 बार जाप करें ,जाप की प्रत्येक आवृत्ति पर उन डलियों पर फूंक मारते रहें और उसी श्वेत वस्त्र में बांध कर कन्या को दे दें ,वह ससुराल में उनमें से 27 डलियां अपने सामान के साथ सुरक्षित रखे और शेष डलियां पीस कर रख ले और कुछ समय तक भोजन में प्रयोग करे।
यदि यही प्रयोग बहू के लिए किया जा रहा है तो डलियों को अभिमंत्रित कर पीस कर रख दें और जब वह घर में हो तभी भोजन में प्रयोग करें। ऐसा करने से जिस कन्या के ससुराली जन प्रतिकूल हैं वो अनुकूल होंगे। और जो वधू ससुराल में नहीं टिकती वो ससुराल में रहने लगेगी।

नजर , जादू या किसी का किया कराया उसी

कभी कभी किसी व्यक्ति पर नजर, जादू,टोना, टोटका ,किसी गुनिया ओझा के किये करायें का दुष्प्रभाव हो जाता है। ऐसे दुष्प्रभाव को समाप्त करने में यह मंत्र अत्यंत कारगर सिद्ध होता है।

मंत्रः-

"एक ठो सरसों सोला राई
मोरो पटवल को रोजाई
खाय खाय पड़े भार
जे करे ते मरे उलट विद्या ताही पर परे*
शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाच"

विधिः-

मंगलवार, शनिवार, अमावस्या, गुरु-पुष्य, रवि-पुष्य किसी सिद्ध काल में ग्यारह माला जपने व सामान्य हवन सामग्री से एक माला हवन करने से मंत्र में अद्भुत प्रभाव प्रकट होता है।

प्रयोग विधिः-

पीली सरसों,काली राई,नमक तीनों को मिलाकर अभिमंत्रित कर के एक डिब्बे में रख लें आवश्यकता होने पर प्रभावित व्यक्ति के सिर से 8 बार घड़ी की विपरीत दिशा में घुमा कर मिश्रित सामग्री आग में डालते जाएं। व्यक्ति पर अभिचार का प्रभाव समाप्त होगा।

व्यापार बाधा निवारक और वृद्धि कारक चमत्कारी शाबर मंत्र।

यह अचूक प्रभाव से युक्त शाबर मंत्र न केवल समस्त व्यापारिक बाधाओं का निवारण करता है , अपितु समानांतर रुप से व्यापार की वृद्धि कर धनागमन भी कराता है।

मंत्र:-

"ओम् नमो हनुमंत वीर
राखो हद धीर,करो ये काम
व्योपार बढ़े तंतर दूर हो
टूणा टूटे कारज सिद्ध हो
धन आये न आये तो माता अंजनी की दुहाई "

विधि:-

किसी भी शुभ मुहूर्त या शुक्ल पक्ष के किसी भी शुक्रवार से प्रारंभ कर ग्यारह हजार जप करें।दिनों की संख्या अपनी सुविधानुसार निर्धारित करें। दशांश हवन अनिवार्य अंग है ही।

“श्री गुरुदेव भगवान के अनुग्रह से
मंत्र चौंतीसा नाम संग्रह पूर्ण हुआ"

संग्रह कर्ता:
राजर्षि अशोकानंद समयाचारी
नर्मदा तट,

स्नेहशील पाठक बंधु।

"गुरु बनने की योग्यता मुझमें नही है, मैं किसी के लिए किसी भी प्रकार का अनुष्ठान नही करता , मैं सिद्ध नहीं हूं, चमत्कार नाम की कोई भी चीज मेरे पास नही है किन्तु भारत की मिट्टी का, जल का और वायु का मैं ऋणी हूं और परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूं कि जब भी मैं मनुष्य बनूं तो इसी धरती का। इस देश में पूर्ण पुरुष अवतार लेते हैं, इस देश में ऋषियों ने तपस्या की है, विश्वामित्र और भगीरथ जैसे प्रबल प्रयत्नवादी रहे हैं और मैं केवल जन्म लेने मात्र से ही इस देश की गौरवपूर्ण संस्कृति और वैभवपूर्ण इतिहास से जुड़ जाता हूं- यह क्या कम सौभाग्य की बात है ? जब कभी साधना और विशेष रुप से तंत्र जैसे गहन और गूढ़ विषय पर लिखने की सोचता हू तो रोमांच हो आता है और मेरे भीतर कोई दूसरा अस्तित्व आ बैठता है मैं नही जानता कैसा लिखा, कला का अवतरण जब होता है तो व्यक्ति अपने अस्तित्व को भूल जाता है और ऐसे वक्त में जो कुछ लिखा जाता है वह मन की गहराई से, विवेक से लिखा जाता है। कहीं न कहीं स्थूल दिखने वाले शरीर में कोई सूक्ष्म सत्ता आ विराजती है। परिणामत: उसे जो लोक हितार्थ जो कराना होता है वो मेरे भाव और लेखनी को वैसा प्रेरित करती रहती है। और उसी की अंतर्प्रेरणा से मैं लिखता रहता हूं। निष्पक्षत: कहूं तो की कई बार मुझ स्वयं के लिए यह यकीन करना बड़ा मुश्किल होता है। कि यह मैं ने ही लिखा है। पर फिर विश्वास करना पड़ता है।

लेखक परिचय:-

राजर्षि अशोकानंद समयाचारी

काशी की परंपरा के विख्यात संत स्वामी विशुद्धानंद जी(गंध बाबा) के प्रपौत्र शिष्य हैं। संप्रति नर्मदा उदगम स्थल -अमरकंट के निकट ही निवासरत होकर साधन चिंतन में रत।

पहल और प्रस्तुति

मूल्य :

RS 100 /-